



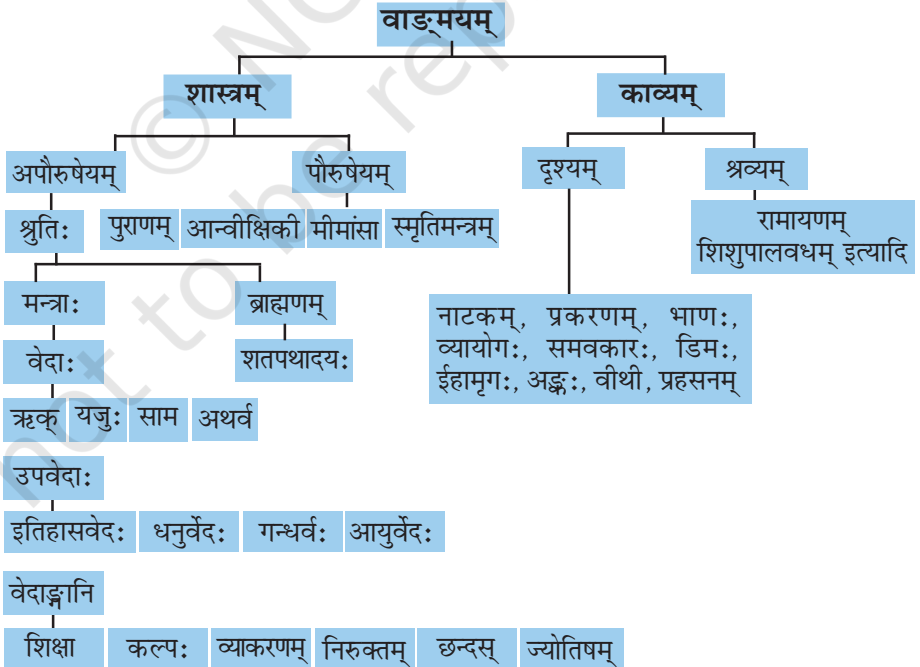
12077CHI2

दशमः पाठः

विद्यास्थानानि

प्रस्तुत पाठ राजशेखर की काव्यमीमांसा से संगृहीत है। काव्यमीमांसा काव्यशास्त्र परम्परा में एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें काव्यशास्त्र की विशेष व्याख्या के अतिरिक्त संस्कृत वाङ्मय की सुविस्तृत ज्ञानराशि का परिचय है, जो तत्कालीन भारत के अध्ययन-अध्यापन के विशाल परिदृश्य को प्रकट करता है। इसमें चतुर्दश-विद्याओं के विषय में चर्चा की गयी है। यहाँ बताया गया है कि वाङ्मय के दो भेद होते हैं शास्त्र और काव्य। इस ग्रन्थ के आरम्भ में शास्त्र के भेद और उपभेदों का परिगणन किया गया है।

इह हि वाङ्मयमुभयथा शास्त्रं काव्यं च। शास्त्रं द्विधा-अपौरुषेयं पौरुषेयं च। अपौरुषेयं श्रुतिः। श्रुतिः पुनः द्विविधा-मन्त्राः ब्राह्मणं च। विवृतक्रियातन्त्रा मन्त्राः। मन्त्राणां स्तुतिनिन्दाव्याख्यानविनियोगग्रन्थो ब्राह्मणम्। ऋग्यजुःसामवेदास्त्रयी आथर्वणश्च तुरीयः।



तत्रार्थव्यवस्थितपादाः ऋचः। ताः सगीतयः सामानि। अच्छन्दांस्यगीतानि यजूषि। ऋचो यजूषि सामानि चाथर्वणं, त इमे चत्वारो वेदाः। इतिहासवेदः धनुर्वेदः गन्धर्ववेदः आयुर्वेदः च उपवेदाः। “वेदोपवेदात्मा सार्ववर्णिकः पञ्चमो गेयवेदः” इति द्रौहिणिः। “शिक्षा, कल्पो, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दोविचितिः, ज्योतिषं च षडङ्गानि” इत्याचार्याः। “उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्” इति यायावरीयः। ऋते च तत्स्वरूपपरिज्ञानाद्वेदार्थानवगतिः। यथा—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

तत्र वर्णानां स्थान-करण-प्रयत्नादिभिः निष्पत्तिनिर्णयिनी शिक्षा। नानाशाखाधीतानां मन्त्राणां विनियोजकं सूत्रं कल्पः। सा च यजुर्विद्या। शब्दानामन्वाख्यानं व्याकरणम्। निर्वचनं निरुक्तम्। छन्दसां प्रतिपादयित्री छन्दोविचितिः। ग्रहगणितं ज्योतिषम्। पौरुषेयं तु पुराणम्, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रम् इति चत्वारि शास्त्राणि। तत्र वेदाख्यानोपनिबन्धनप्रायं पुराणमष्टादशधा। यदाहुः—

सर्गः प्रतिसंहारः कल्पो मन्वन्तराणि वंशविधिः।

जगतो यत्र निबद्धं तद्विज्ञेयं पुराणमिति॥

“पुराणप्रभेद एवेतिहासः” इत्येके। स च द्विधा परिक्रियापुराकल्पाभ्याम्। यदाहुः—

परिक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा।

स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका॥

तत्र रामायणं भारतं चोदाहरणे। निगमवाक्यानां न्यायैः सहस्रेण विवेकत्री मीमांसा। सा च द्विविधाविधिविवेचनी ब्रह्मनिदर्शनी च। अष्टादशैव श्रुत्यर्थस्मरणात्स्मृतयः। तानि इमानि चतुर्दश विद्यास्थानानि, यदुत वेदाश्चत्वारः षडङ्गानि, चत्वारि शास्त्राणि इत्याचार्याः।

विद्यास्थानानि

वेदाः

1. ऋक्
2. यजुः
3. साम
4. अथर्व

वेदाङ्गानि

5. शिक्षा
6. कल्पः
7. व्याकरणम्
8. निरुक्तम्
9. छन्दः
10. ज्योतिषम्

शास्त्राणि

11. पुराणम्
12. आन्वीक्षिकी
13. मीमांसा
14. स्मृतितन्त्रम्

शब्दार्थाः टिपण्यश्च

वाङ्मयम्	- वाग्जालम्, वाणी प्रपञ्च
उभयथा	- द्विविधा, दो प्रकार वाला।
अपौरुषेयम्	- पुरुषेण न निर्मितम्, जो पुरुष के द्वारा रचित नहीं है।
पौरुषेयम्	- पुरुषेण निर्मितम्, जो पुरुष के द्वारा रचित है।
विवृतम्	- सम्यक् निरूपितम्, ठीक प्रकार से वर्णित।
क्रियातन्त्राः	- कर्मकाण्डकलापाः, कर्मकाण्ड।
सार्ववर्णिकः	- सर्वेषां वर्णानां कृते उपयुक्तः, सब वर्णों के लिए उचित।
यायावरीयः	- नाम (राजशेखरः), राजशेखर।
सुपर्णा (वैदिक प्रयोग)	- खगौ, दो पक्षी।
सयुजा (वैदिक प्रयोग)	- सहचरौ, एक साथ रहने वाले।
परिष्वजाते	- आलिङ्गित (सेवेते) आलिङ्गन करते हैं (निवास करते हैं)।
पिप्पलम्	- फलम्, फल।
अनश्नन्	- अखादन्, न खाता हुआ।
अत्ति	- खादति, खाता है।
अभिचाकशीति	- प्रकाशते, प्रकाशित होता है।
निष्पत्तिः	- उत्पत्तिः, उत्पत्ति।
निर्णयिनी	- निर्णयिका, निर्णय करने वाली।
आपिशलि	- नाम, नाम
अधीतानाम्	- पठितानाम्, पढ़े हुए का।
अन्वाख्यानम्	- प्रकृतिप्रत्ययविभाजनम्, प्रकृति प्रत्यय विभाग द्वारा शब्दार्थ ज्ञान।
पुरस्तात्	- पूर्वम्, पहले।
आख्यानम्	- प्रवचनम्, कथन।
उपनिबन्धनम्	- संग्रहणम्, संग्रह।
परिक्रिया	- यत्र एकनायकेन सम्बद्धा कथा वर्णिता, जहाँ एक नायक से सम्बन्धित कथा वर्णित हो (यथा रामायण)।
पुराकल्प	- यत्र बहुनायकसम्बद्धा कथा, जहाँ अनेक नायकों से सम्बन्धित कथा हो (जैसे महाभारत)।
विवेकत्री	- विवेचिका, विवेचन करने वाली

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) वाङ्मयस्य उभौ भेदौ लिखत?
- (ख) अपौरुषेयं किम् अस्ति?
- (ग) विवृत्तक्रियातन्त्राः के सन्ति?
- (घ) ब्राह्मणं केषां स्तुतिनिन्दाव्याख्यानविनियोगान् करोति?
- (ङ) वेदाः कति सन्ति? तेषां नामानि लिखत।
- (च) षडङ्गानां नामानि लिखत।
- (छ) व्याकरणं किं कथ्यते?

2. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) शब्दानाम् अन्वाख्यानं व्याकरणम्।
- (ख) पुराणं पौरुषेयम् अस्ति।
- (ग) ज्योतिषं ग्रहगणितम् अस्ति।
- (घ) इतिहासः पुराणप्रभेदोऽस्ति।
- (ङ) मीमांसा सहस्रेण न्यायैः निगमवाक्यानां विवेकत्री अस्ति।

3. उचितां पक्तिं मञ्जूषायाः चित्वा समक्षं लिखत-

विवृत्तक्रियातन्त्राः, इतिहासवेदः धनुर्वेदः गन्धर्वः आयुर्वेदः च, द्विविधामन्त्राः ब्राह्मणञ्च, अपौरुषेयं पौरुषेयं च, शास्त्रं काव्यं च

- (क) वाङ्मयम् उभयथा -
- (ख) शास्त्रं द्विधा -
- (ग) श्रुतिः -
- (घ) मन्त्राः -
- (ङ) उपवेदाः -

4. उचितमेलनं कुरुत-

- (क) चत्वारि शास्त्राणि - ज्योतिषम्
- (ख) शब्दानामन्वाख्यानम् - पुराणम्
- (ग) मन्त्राणां विनियोजकं सूत्रं - कल्पः
- (घ) पौरुषेयं - व्याकरणम्
- (ङ) ग्रहगणितम् - पुराणम्, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रम्।

5. उचितविभक्तिं प्रयुज्य संख्यावाचिशब्दानां प्रयोगं कुरुत-

- (क) वेदाः। (चतुर्)

- (ख) अङ्गानि। (षट्)
 (ग) शास्त्राणि। (चतुर्)
 (घ) नायकः। (एक)
 (ङ) पुराणानि। (अष्टादश)

6. अव्ययपदानि चित्वा लिखत-

- (क) जगतो यत्र निबद्धं तद्विज्ञेयं पुराणम्। -
 (ख) पुराणप्रभेद एव इतिहासः। -
 (ग) अष्टादश एव श्रुत्यर्थस्मरणात्स्मृतयः। -
 (घ) स च द्विधा परिक्रियापुराकल्पाभ्याम्। -
 (ङ) तत्र वर्णानां स्थान-करण-प्रयत्नादिभिः
 निष्पत्तिनिर्णयिनी शिक्षा। -

7. सन्धिं कुरुत-

- (क) ब्राह्मणम्+च -
 (ख) आथर्वणः+च -
 (ग) वेद+आत्मा -
 (घ) अष्टादश+एव -
 (ङ) छन्दांसि+अगीतानि -

8. निम्नलिखितशब्दानां सहायतया वाक्यप्रयोगं कुरुत-

इह, वेदाः, अत्ति, अनशनन्, एव

9. विपरीतार्थकपदं लिखत-

- (क) पौरुषेयम् -
 (ख) एकः -
 (ग) यत्र -
 (घ) यत् -
 (ङ) यथा -

योग्यताविस्तारः

अयं पाठः काव्यमीमांसायाः सङ्गृहीतः। अस्मिन् पाठे अष्टादश-काव्यविद्यायानां वर्णनम् अस्ति। यथा-
 शास्त्रसङ्ग्रहः
 शास्त्रनिर्देशः
 काव्यपुरुषोत्पत्तिः
 पदवाक्यविवेकः

पाठप्रतिष्ठा
 अर्थानुशासनं
 वाक्यविधयः
 कविविशेषः
 कविचर्या
 राजचर्या
 काकप्रकाराः
 शब्दार्थाहरणोपायाः
 कविसमयः
 देशकालविभागः
 भुवनकोशः
 कविरहस्यम्
 प्रथममधिकरणम्

© NCERT
not to be republished

अनुशासित ग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	संपादक/प्रकाशक
1.	अथर्ववेदः	-	सातवलेकर पारडी, 1957
2.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
3.	ऋग्वेदः	-	सं.प्र.एन.एस.सोनटक्के, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना-महाराष्ट्र-02
4.	कथासरित्सागर	सोमदेव	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
5.	कथासरित्सागर	शूद्रक	हिन्दी रूपान्तर प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली-07
6.	कादम्बरी	बाणभट्ट	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
7.	चरकसंहिता	चरक	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
8.	जातकमाला	आर्यशूर	सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
9.	दशकुमारचरितम्	दण्डी	श्री विश्वनाथ झा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली-07
10.	पञ्चरात्रम्	भास	भासनाटकचक्रम, सं.सी.आर.देवधर, ओरिएण्टल बुक एजेन्सी, पूना-1945
11.	पुरन्ध्रीपञ्चकम्	वेदकुमारी घई	राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी, नई दिल्ली
12.	प्रतापविजयः	ईशदत्तः	वाणीविलास, वाराणसी
13.	बुद्धचरितम्	अश्वघोष	चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी
14.	भारतविजयनाटकम्	मथुराप्रसाद दीक्षित	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
15.	भोजप्रबन्धः	बल्लालसेन	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली
16.	महाभारतम्	व्यास	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07

17.	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यास	गीताप्रेस, गोरखपुर
18.	काव्यमीमांसा	राजशेखर	—
19.	महाभाष्यम्	पतञ्जलि	चारुदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07
20.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई
21.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	हिन्दी अनुवाद मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-1962
22.	यजुर्वेदः	उव्वटमहीधर भाष्य	चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1912
23.	रघुवंशम्	कालिदास	मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली-07
24.	रामायणम्	वाल्मीकि	नाग पब्लिशर्स, जवाहरनगर, दिल्ली-07
25.	वैदिक साहित्य और संस्कृति	बलदेव उपाध्याय	शारदा मंदिर, वाराणसी
26.	शिवराजविजयः	अम्बिकादत्त व्यास	साहित्य पुस्तक भण्डार, मेरठ
27.	श्रीराधा	रमाकान्त रथ	—
28.	संस्कृत नाटक	ए.बी.कीथ, उदयभानुसिंह	(हिन्दी अनुवाद), मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली-07
29.	संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी
30.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	बलदेव उपाध्याय	शारदा मन्दिर, वाराणसी
31.	हितोपदेशः	नारायणशर्मा	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-07



मङ्गलम्

ॐ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सङ्गमेमहि ॥1॥

(ऋग्वेद - 5.51.15)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥2॥

(यजुर्वेद - 5.36)

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥3॥

(अथर्ववेद - 19.15.6)

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥4॥

(अथर्ववेद - 19.41.1)

भावार्थः

सूर्य और चन्द्रमा के समान हम कल्याण के पथ का अनुगमन करें। निरन्तर दान करते हुए, टकराव/हिंसा को छोड़ कर परस्पर एक दूसरे को जानते/समझते हुए साथ-साथ चलें ॥1॥

हे अग्निदेव! हमें धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे मार्ग से ले चलें। आप सम्पूर्ण उत्तम मार्गों के ज्ञाता हैं। अतः हमें पापाचरण एवं कुटिल मार्ग से बचाएँ। हम आपको बहुत प्रकार से नमस्कार करते हैं ॥2॥

मित्रों, शत्रुओं तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनिष्टों से हमें किसी प्रकार का भय न हो। हमें दिन और रात्रि में निर्भयता की प्राप्ति हो। अभय के लिए सभी दिशाएँ मित्रवत् कल्याणकारी हों ॥3॥

सबके हितचिन्तक आत्मज्ञानी ऋषि सृष्टि के प्रारम्भ में तप और दीक्षादि नियमों का पालन करने लगे। उसी से राष्ट्रीय भावना, बल और सामर्थ्य की उत्पत्ति हुई। अत एव ज्ञानी लोग उस (राष्ट्र) के समक्ष विनम्र हों (राष्ट्र सेवा करें)॥4॥



© NOT REPRINTED
not to be republished